

# कमोडिटी और डेरिवेटिव्स मार्केट पर पूछे जाने वाले अधिकतर सवाल

कमोडिटी डेरिवेटिव्स मार्केट के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियां

प्र. 1 **“कमोडिटी एक्सचेंज” क्या है?**

उ. पूंजी बाजार में स्टाक एक्सचेंजों की तरह कमोडिटी एक्सचेंज भी एक एसोसिएशन या एक कंपनी या अन्य कंपनी निकाय है जो जिसों (कमोडिटी) में वायदा कामकाज सुलभ कराता है। नई पीढ़ी के आज निगमीकृत/ गैर-साझा (डिम्ब्युच्युअलाइज्ड) राष्ट्रीयस्तर के एक्सचेंज शुरू किए गए हैं। भारत में इस समय राष्ट्रीयस्तर के 3 प्रतिष्ठित कमोडिटी एक्सचेंज और 22 प्रादेशिक एक्सचेंज है। राष्ट्रीयस्तर के एक्सचेंज हैं-मुंबई में मल्टी कमोडिटीज एक्सचेंज आफ इंडिया, नेशनल कमोडिटीज एंड डेरिवेटिव्स एक्सचेंज आफ इंडिया और नेशनल मल्टी कमोडिटीज एक्सचेंज।

प्र. 2 **“कमोडिटी” क्या है?**

उ. कमोडिटी व्यापारिक दृष्टि से एक ऐसा कारोबारी उत्पाद है जिसका उत्पादन, क्रय, विक्रय और उपभोग हो सकता है। आमतौर पर यह एक कच्चा गैर-प्रोसेस उत्पाद है। लेकिन इन एक्सचेंजों में प्राइमरी क्षेत्र के उत्पादों और निर्मित उत्पादों के भी सौदे होते हैं। भारत में ऐसे कारोबारी उत्पादों की सूची में बहुमूल्य धातु, लौह एवं अलौह धातु, मसाले, दलहन, प्लांटेशन, अनाज, चीनी और अन्य कृषि वस्तुएं शामिल हैं।

प्र. 3 **कमोडिटी मार्केट में कौन-कौन हिस्सा ले सकते हैं?**

उ. इस मार्केट में हेजर, आर्बिट्रेजर और सटोरिया बड़े पैमाने पर हिस्सा ले सकते हैं। दूसरे शब्दों में, उत्पादक, ट्रेडर, किसान, निर्यातक और निवेशक भी इस बाजार में भाग ले सकते हैं।

प्र. 4 **कमोडिटी एक्सचेंजों में ट्रेडिंग कैसे होती है?**

उ. स्टाक मार्केट आनलाइन ट्रेडिंग सिस्टम की तरह ही कमोडिटी एक्सचेंज भी खास रूप से आनलाइन ट्रेडिंग सिस्टम पर ही चलते हैं। यह एक आर्डर आधारित, पारदर्शक कारोबारी मंच है जिसका पूरे देश में फैले एक्सचेंज के सदस्य अथवा सब ब्रोकर इंटरनेट, वीसैट और लीड लाइन के जरिए खरीद-फरोख्त के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं।

प्र. 5 **“वायदा कांट्रैक्ट” का अर्थ क्या है?**

उ. वायदा कांट्रैक्ट भविष्य में निर्धारित एक तिथि पर क्रेता या विक्रेता द्वारा सुनिश्चित मात्रा और गुणवत्ता की कमोडिटी में प्रवेश के समय परस्पर सहमति का एक विशेष करार है। इसका खास रूप से विनियमित कमोडिटी एक्सचेंजों में ट्रेड होता है।

प्र. 6 **हाज़िर बाजार और वायदा बाजार में क्या अंतर है?**

उ. हाज़िर बाजार में कमोडिटी की भौतिक खरीद या बिक्री आमतौर पर भावतोल आधार पर होती है और उसकी डिलीवरी होती है जबकि वायदा बाजार में कमोडिटी की भौतिक रूप से अधिकार नहीं होने के बावजूद खरीद या बेच हो सकती है। वायदा बाजार के सौदे मूल संपत्ति की मानकीकृत अनुबंधीय समझौते के तहत निर्दिष्ट गुणवत्ता, मात्रा और डिलीवरी के माध्यम से होते हैं, जिसके सेटलमेंट की गारंटी विनियमित कमोडिटी एक्सचेंजों द्वारा दी जाती है।

- प्र. 7 **हेजिंग का क्या अर्थ है?**  
उ. हेजिंग का अर्थ फिजिकल मार्केट में पोजिशन के विपरीत वायदा या आप्शन मार्केट में पोजिशन बनाना है। इससे भाव में अचानक घटबढ़ से उत्पन्न जोखिम को कम या सीमित किया जा सकता है। इस प्रणाली का उद्देश्य एक बाजार के घाटे को दूसरे के लाभ से पूरा करना है।
- प्र. 8 **सटोरिया कौन हैं?**  
उ. सटोरिया ऐसे कारोबारी होते हैं जो वायदा भावों की घटबढ़ का लाभ उठाने के लिए बाजार में प्रवेश करते हैं। ऐसे कारोबारी के पास भौतिक रूप से माल नहीं होता है लेकिन वह बाजार में जोखिम उठाता है जिससे हेजर्स बचना चाहते हैं। इससे बाजार में आवश्यक तरलता आती है।
- प्र. 9 **कमोडिटी मार्केट में आर्बिट्रिज का तात्पर्य क्या है?**  
उ. आर्बिट्रिज दो विभिन्न बाजारों के भावों के अंतर का लाभ उठाने के उद्देश्य से दोनों बाजारों में एक ही समय खरीद और बिक्री करते हैं। आर्बिट्रिज को चलाने वाले घटक या तो वास्तविक होते हैं या विभिन्न स्थानों में मांग और आपूर्ति के बीच का संतुलन हैं।
- प्र. 10 **वेयरहाउस रसीद क्या है?**  
वेयरहाउस रसीद वेयरहाउस मालिकों द्वारा डिपाजिटर्स को वेयरहाउस में जमा कराए गए जिनसों के विवरण के बारे में जारी अधिकृत दस्तावेज है। इन दस्तावेजों को इंडोर्समेंट या डिलीवरी के लिए ट्रांसफर किया जा सकता है।
- प्र. 11 **कमोडिटी में वायदा कारोबार के क्या लाभ हैं?**  
कमोडिटी में वायदा कारोबार का सबसे बड़ा लाभ भाव जोखिम प्रबंधन और भाव खोज है। किसान अवांछित भाव घटबढ़ से अपने को बचा सकते हैं और अलग अलग फसल के बारे में निर्णय ले सकते हैं। व्यापारी भाव जोखिम से बच सकते हैं। प्रोसेसर कच्चे माल के मूल्य को नियंत्रित करते हैं और इंटेंटरी वैल्यू को कम करता है। इंटर्नेशनल ट्रेडर्स अपने भावों को लॉक कर सकते हैं।
- प्र. 12 **कमोडिटी एक्सचेंजों के नियमन के लिए वैधानिक ढांचा क्या है?**  
कमोडिटी एक्सचेंज भारत सरकार द्वारा फारवर्ड कांट्रैक्ट्स (रेग्यूलेशन) एक्ट, 1952 के अंतर्गत नियमित होते हैं। इसके नियामक वायदा बाजार आयोग (एफएमसी) का कार्यालय मुंबई में है और यह केंद्र सरकार के उपभोक्ता मामलों, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय के अंतर्गत कार्य करता है।
- प्र. 13 **कमोडिटी एक्सचेंजों में कौन सौदा कर सकते हैं?**  
कमोडिटी एक्सचेंजों की सदस्यता का प्रारूप स्टाक एक्सचेंजों जैसा है। एक्सचेंज के सदस्य और सदस्यों के पंजीकृत, मान्य/प्राधिकृत ग्राहक ही कमोडिटी एक्सचेंजों में कारोबार कर सकते हैं।
- प्र. 14 **कमोडिटी में कास्ट आफ कैरी के विभिन्न तत्व क्या हैं?**  
उ. एक कमोडिटी के कास्ट आफ कैरी ब्याज, बीमा, स्टोरेज खर्च और अन्य खर्चों सहित कुल खर्च है। सामान्यतः एक्सचेंज में कमोडिटी के वायदा भाव हाज़िर भाव और कास्ट आफ कैरी सहित होता है।

- प्र. 15 **परिपक्वता तिथि पर वायदा कांट्रैक्ट के भाव का क्या होता है?**  
उ. परिपक्वता तिथि पर वायदा के भाव हाजिर भावों के साथ एकाकार हो जाते हैं।
- प्र. 16 **कमोडिटी के वायदा में मार्जिन मनी क्या है ?**  
उ. मार्जिन मनी सदस्यों द्वारा एक्सचेंज को दी गई सेक्युरिटी डिपॉजिट है ताकि उनके द्वारा एक्सचेंज में सूचीबद्ध विभिन्न कांट्रैक्टों में सौदे किए जा सकें। ग्राहक एक्सचेंज के सदस्यों को यह राशि जमा कराते हैं और सदस्य उसे एक्सचेंजों में जमा करा देते हैं।
- प्र. 17 **कलेक्टिंग मार्जिन का उद्देश्य क्या है?**  
उ. एक्सचेंजों द्वारा मार्जिन मनी कलेक्ट करने का उद्देश्य सदस्यों के डिफॉल्ट होने या उनके ग्राहकों द्वारा देयताएं न चुकाने की सूरत में काउंटर पार्टी जोखिम से बचना है। यह नियामक वायदा बाजार आयोग (एफएमसी) द्वारा निर्धारित जोखिम प्रबंधन प्रणाली का एक हिस्सा है।
- प्र. 18 **आरंभिक मार्जिन क्या है?**  
उ. सदस्यों/ग्राहकों द्वारा किसी कांट्रैक्ट में नई खरीद या बिक्री की पहल करने से पूर्व उस कांट्रैक्ट के वैल्यू का न्यूनतम प्रतिशत एक्सचेंज को जमा कराना आरंभिक मार्जिन कहलाता है।
- प्र. 19 **डिलीवरी पिरीयड मार्जिन का अर्थ क्या है?**  
उ. कांट्रैक्ट की समाप्ति के अंतिम दिनों में (टेंडर अवधि से शुरू और डिलीवरी/निपटान तक) एक्सचेंज द्वारा लगाई गई अतिरिक्त मार्जिन है। यह राशि क्रय एवं विक्रय दोनों के बकाया पोजिशनों पर लागू होती है।
- प्र. 20 **मार्क-टू-मार्केट क्या है?**  
उ. प्रत्येक कारोबार दिन के अंत में ट्रेडर/ग्राहक के मार्जिन खाते को सहभागी के लाभ या हानि के सामने समांजस्य किया जाता है। प्रत्येक ट्रेडिंग दिन के भावों में बदलाव पिछले दिन के बंद भाव से तुलना करने पर उक्त लाभ हानि का पता चलता है। भावों के इस घटबढ़ को दैनिक मार्जिन खाते से समायोजित किया जाता है। इस पूरी प्रक्रिया को मार्क-टू-मार्केट कहते हैं।
- प्र. 21 **किसी वायदा कांट्रैक्ट के ओपन पोजिशन को समाप्ति तिथि से पूर्व एसक्वायर अप (निपटान) नहीं होने पर क्या होता है?**  
उ. किसी कांट्रैक्ट की समाप्ति तिथि के दिन या उससे पूर्व ओपन पोजिशन को बंद (एसक्वायर अप) नहीं होने के मामले में लांग/शार्ट पोजिशन को देखते हुए ट्रेडर को उक्त कमोडिटी की डिलीवरी या तो लेनी पड़ती है या उतारनी पड़ती है। इसका निपटान कांट्रैक्ट के अंतर्गत निर्दिष्ट सेटलमेंट मोड के अनुसार होता है।
- प्र. 22 **एक्सचेंजों पर ट्रेड कैसे किए जाते हैं?**  
उ. एक्सचेंज पर प्रत्येक ट्रेड दैनिक आधार पर मार्क-टू-मार्केट (एमटीएम) के आरंभिक मार्जिन द्वारा समर्थित होते हैं। इसके बाद सदस्यों के सेटलमेंट खाते में बकाए राशि को तदानुसार डेबिट या क्रेडिट किए जाते हैं। इनका भुगतान इलेक्ट्रॉनिक रूप से क्लियरिंग बैंकों द्वारा प्रोसेस की जाती है।

- प्र. 23 **टेंडर अवधि से आप क्या समझते हैं?**  
उ. कांट्रैक्ट टेंडर अवधि में समाप्ति से कुछ दिन पूर्व प्रवेश करता है। इससे सदस्यों को डिलीवरी लेने या उतारने के लिए अपने मंतव्य बताने का समय मिलता है।
- प्र. 24 **वेय तिथि की दर (डीडीआर) क्या है?**  
उ. यह एक दर है जिसपर कांट्रैक्टों का निपटान समाप्ति के दिन किया जाता है। आमतौर पर यह कांट्रैक्ट की समाप्ति के कुछ दिन पूर्व हाजिर भावों का लिया गया औसत (एक्सचेंज द्वारा निर्दिष्ट) है।
- प्र. 25 **कांट्रैक्ट अवधि के अंत में डिलीवरी में डिफाल्ट के मामले में क्या होता है?**  
उ. डिफाल्ट के मामले में कांट्रैक्ट के विनिर्देशन के मुताबिक निर्दिष्ट प्रतिशत में पेनाल्टी चार्ज की जाती है।
- प्र. 26 **हेज खरीदना और हेज बेचना का मतलब क्या है?**  
उ. हेज खरीदने का अर्थ कैश मार्केट में शार्ट पोजिशन के सामने हेज के लिए वायदा कांट्रैक्ट खरीदना है। सेलिंग हेज का अर्थ कैश मार्केट में लांग पोजिशन के सामने वायदा कांट्रैक्टों को बेचना है।
- प्र. 27. **क्या एक असेट की विविधीकृत पोर्टफोलियो जोखिम-मुक्त हो सकती है?**  
उ. नहीं, विविधीकृत असेट पोर्टफोलियो भी जोखिम-मुक्त नहीं हो सकते। क्योंकि ऐसे पोर्टफोलियो में भी सिस्टमैटिक जोखिम होती है।
- प्र. 28 **हेजिंग के मुख्य लाभ क्या हैं?**  
उ. यह फिजिकल कमोडिटी से जुड़े भाव के जोखिम को कम या सीमित करता है। इसमें कच्चे माल की कीमत और अंतिम उत्पादों के भाव लाक हो जाते हैं ताकि लाभ सुनिश्चित हो सके।
- प्र. 29 **वायदा भावों का हाजिर भावों से एकाकार होने का अर्थ क्या है?**  
उ. कमोडिटी वायदा कांट्रैक्ट के समाप्ति तिथि तक पहुंचते ही वायदा भाव का झुकाव या एकाकार उक्त कमोडिटी के हाजिर भावों की ओर होने लगता है। इसे वायदा भाव को हाजिर भाव से एकाकार होना कहते हैं।

### एमसीएक्स ट्रेडर वर्क स्टेशन (टीडब्ल्यूएस)

- प्र. 30 **लिमिट आर्डर और मार्केट आर्डर में अंतर क्या है?**  
उ. लिमिट आर्डर क्रय या विक्रय के भाव नीचे और उपर में सुनिश्चित करता है। दूसरी तरफ ऐसे आर्डर देने पर मार्केट आर्डर चल रहे भाव पर निष्पादित हो जाता है। आर्डर देने पर यदि कोई सौदा नहीं होता है, ट्रेडिंग सिस्टम अंतिम कारोबारी भाव को मार्केट आर्डर मान लेता है और यह आर्डर सिस्टम में रहता है।
- प्र. 31 **स्टाप लास आर्डर क्या है?**  
उ. स्टाप लास आर्डर कमोडिटी के वायदा भाव में व्यापक घटबढ़ में हानि को सीमित करने के लिए दिया जाता है। ये आर्डर सिस्टम में सस्पेंडेड या एबेयांस मोड में होते हैं और ये तभी एक्टिवेट होते हैं जब भाव आता है। इससे वर्तमान पोजिशन बंद करने में मदद मिलती है।

- प्र. 32 **डे आर्डर और गुड-टिल-डेट आर्डर में अंतर क्या है ।**  
उ. डे आर्डर कारोबारी दिन में डे ट्रेडिंग के लिए उपलब्ध रहते हैं। सभी डे आर्डर दिन की समाप्ति तक पूरा नहीं होने पर अंत में कैसल हो जाते हैं। गुड टिल डेट आर्डर कांट्रैक्ट के अंतिम कारोबार दिन या निर्दिष्ट तिथि जो भी पहले हो, तक सौदे के लिए चालू रहता है।
- प्र. 33 **गुड-टिल-कैसल आर्डर क्या है?**  
उ. गुड-टिल कैसल आर्डर तब तक जारी रहता है जबतक उसे एक्सक्यूट या कैसल नहीं किया जा सके। चाहे इसमें कितना भी दिन या सप्ताह क्यों न लगे। निवेशक ज्यादातर जीटीसी आर्डर का इस्तेमाल वर्तमान भाव से अधिक भाव पर लिमिट सेट करने के लिए करते हैं। एक जीटीसी आर्डर कांट्रैक्ट की समाप्ति तक एक्सक्यूशन या कैसलेशन जो भी पहले हो, के लिए उपलब्ध रहता है।
- प्र. 34 **कांट्रैक्ट विनिर्देशन से आपका क्या तात्पर्य है?**  
उ. कांट्रैक्ट विनिर्देशन एक ऐसा दस्तावेज है जो एक्सचेंज में कारोबारी कमोडिटी के विस्तृत विनिर्देश और पैरामीटर्स को दर्शाता है। कांट्रैक्ट विनिर्देशन में ट्रेडिंग ब्यूरा, कांट्रैक्ट की अवधि या समाप्ति तिथि, गुणवत्ता पैरामीटर, डिलीवरी मोड और उसका विवरण आदि का समावेश होता है। इसमें एक्सचेंज में सफलतापूर्वक सौदे किए जाने वाले सभी संभव विवरणों का उल्लेख होता है जिसमें ट्रेडिंग लाट, प्राइस कोट, आर्डर साइज, टिक साइज, दैनिक भाव सीमा, मार्जिन और ओपन पोजिशन, डिलीवरी सेंटर, सेटलमेंट प्राइस एवं प्रक्रिया, टेंडर/डिलीवरी पिरीयड, कराधान और कानूनी वैधता आदि शामिल हैं।
- प्र. 35 **भारत में कमोडिटी वायदा के लिए कांट्रैक्ट विनिर्देशन कौन जारी करता है?**  
उ. कमोडिटी एक्सचेंज ही बाजार के नियामक वायदा बाजार आयोग (एफएमसी) के अनुमोदन के बाद प्रत्येक कमोडिटी के कांट्रैक्ट विनिर्देशन को जारी करते हैं।
- प्र. 36 **कमोडिटी फ्युचर्स कांट्रैक्ट की लाइफ क्या होती है?**  
उ. कमोडिटी फ्युचर्स कांट्रैक्ट की लाइफ एक ऐसी अवधि है जब कांट्रैक्ट ट्रेडिंग के लिए उपलब्ध होता है। भारत में यह फिलहाल एक महीने से कुछ महीनों के बीच है।
- प्र. 37 **कमोडिटी फ्युचर्स कांट्रैक्ट की समाप्ति तिथि क्या है?**  
उ. कांट्रैक्ट के विनिर्देशन के मुताबिक कांट्रैक्ट के अंतिम कारोबारी दिन ही समाप्ति तिथि है जिसदिन सेटलमेंट भाव निर्धारित होते हैं।
- प्र. 38 **समाप्ति तिथि के दिन अवकाश होने पर क्या होता है?**  
उ. समाप्ति तिथि के दिन अवकाश होने पर कांट्रैक्ट अगले कारोबारी दिवस पर समाप्त होता है। यदि अंतिम कारोबारी दिन के दिन अचानक छुट्टी घोषित होती है, ऐसे में कांट्रैक्ट अगले कारोबारी दिन बंद होगा।
- प्र. 39 **प्राइस लिमिट सर्किट फिल्टर या डेली प्राइस रेंज (डीपीआर) क्या हैं?**  
उ. एक्सचेंज सामान्य कारोबारी सत्र में प्रत्येक कमोडिटी में प्रतिशत घटबढ़ के हिसाब से सर्किट फिल्टर सूचित करता है। दूसरे शब्दों में, सर्किट फिल्टर किसी विशिष्ट सत्र में कारोबारी कांट्रैक्ट में उपलब्ध अधिकतम रेंज को दर्शाता है।

- प्र. 40 **क्या सर्किट फिल्टर सभी कमोडिटी के लिए होते हैं ?**  
उ. नहीं, सर्किट फिल्टर प्रत्येक कमोडिटी पर निर्भर होते हैं। यह वायदा कांट्रैक्ट के डिजाइन के समय उल्लेखित ऐतिहासिक घटबढ़ पर निर्भर होता है।
- प्र. 41 **सर्किट फिल्टर लिमिट से अधिक पर आर्डर पंच करने से क्या होता है?**  
उ. ट्रेडिंग सिस्टम ऐसे सौदो को आटोमेटिकली रद्द कर देता है।
- प्र. 42 **स्पेशल मार्जिन क्या है?**  
उ. स्पेशल मार्जिन बाजार में बेहिसाब घटबढ़ को नियंत्रित करने के लिए लगाई गई अतिरिक्त मार्जिन है। यह भी प्रत्येक कमोडिटी पर निर्भर होता है।
- प्र. 43 **कांट्रैक्ट विनिर्देशन में उल्लेखित प्राइस कोट का अर्थ क्या है?**  
उ. कांट्रैक्ट में उल्लेखित प्राइस कोट का अर्थ ऐसे स्थान/मार्केट से है जहां कमोडिटी के वायदा भावों के लिए स्पॉट बाजार से संदर्भ भाव लिए जाते हैं। ये स्थान/मार्केट उक्त कमोडिटी के लिए प्रमुख उत्पादन केंद्र और या ट्रेड सेंटर हैं। उदाहरण के लिए रबर का प्राइस कोट केरल में एक्स कोटायम है जो प्रमुख उत्पादन और ट्रेड सेंटर है। इसीतरह सोना वायदा कांट्रैक्ट का प्राइस कोट एक्स अहमदाबाद है। प्राइस कोट में सभी सेल्स टैक्स/वैट या अन्य टैक्स और लेवीज भी समाहित होते हैं।
- प्र. 44 **कांट्रैक्ट में टिक साइज से आप क्या समझते हैं?**  
उ. टिक साइज का अर्थ न्यूनतम भाव अंतर या सिस्टम में दो भावों के बीच जरूरी गुणांक है।
- प्र. 45 **कोटेशन/बेस वैल्यू का मतलब क्या होता है?**  
उ. स्टैंडर्ड यूनिट के आधार पर ट्रेडिंग के लिए कांट्रैक्ट के बोले जाने वाले भाव को कोटेशन या बेस वैल्यू कहा जाता है। जैसे कि सोने के कांट्रैक्ट में कोटेशन या बेस वैल्यू 10 ग्राम है।
- प्र. 46 **कांट्रैक्ट विनिर्देशन में निर्धारित ट्रेडिंग यूनिट क्या है?**  
उ. एक्सचेंज में कारोबार होने वाले वायदा कांट्रैक्ट की लाट साइज ट्रेडिंग यूनिट है। जैसे कि सोने के कांट्रैक्ट में ट्रेडिंग यूनिट एक किलोग्राम है।
- प्र. 47 **अधिकतम आर्डर साइज का मतलब क्या होता है ?**  
उ. एकल क्रय-विक्रय के मार्फत निर्दिष्ट अधिकतम मात्रा अधिकतम आर्डर साइज है।
- प्र. 48 **अधिकतम छूटपात्र ओपन पोजिशन क्या है?**  
उ. यह अधिकतम मात्रा है जिसे ओपन पोजिशन के रूप में बनाए रखने की छूट एक्सचेंज ने सदस्य या उसके ग्राहक को दी है।
- प्र. 49. **डिलीवरी यूनिट या डिलीवरी लाट का अर्थ क्या है?**  
उ. कांट्रैक्ट में निर्धारित डिलीवरी पात्र लाट कमोडिटी की मात्रा संबंध रखता है। इसमें साधारणतः वर्तमान ट्रेड प्रैक्टिस और लाजिस्टिक का समावेश होता है।

- प्र. 50 **गुणवत्ता प्रमाणीकरण का अर्थ क्या है?**  
उ. गुणवत्ता प्रमाणीकरण ऐसा मानक है जो कांट्रैक्ट डिलीवरी की संपूर्णता के न्यूनतम मान्य दिशानिर्देश का संकेत है। इन मानकों में कमोडिटी की शुद्धता, नमी की मात्रा, बाहरी घटक, नुकसानी सीमा कमोडिटी कंपोजिशन (फैट, फाइबर, प्रोटीन, तेल), पैकिंग आदि का समावेश होता है।
- प्र. 51 **गुणवत्ता समायोजन का मतलब क्या है?**  
उ. गुणवत्ता समायोजन का अर्थ डिलीवरी के समय मान्य कमोडिटी की डिलीवरी में अधिकतम छूटपात्र सीमा से है। इस आधार पर कांट्रैक्ट के वैल्यू के अनुसार उचित प्रीमियम या डिस्काउंट का सामंजस्य होता है।
- प्र. 52 **कमोडिटी वायदा कांट्रैक्ट की समाप्ति तिथि पर डिलीवरी कहां होती है?**  
उ. कमोडिटी वायदा कांट्रैक्ट की समाप्ति तिथि पर डिलीवरी एक्सचेंज मान्य डिलीवरी केंद्र/ वेयरहाउस में कांट्रैक्टों के विनिर्देशन के अनुसार होती है।
- प्र. 53 **कांट्रैक्ट के विनिर्देशन के अनुसार डिलीवरी सेंटर क्या होते हैं?**  
उ. एक्सचेंज मान्य वेयरहाउस विभिन्न स्थानों पर कमोडिटी की डिलीवरी के लिए केंद्र होते हैं जहां सदस्य डिलीवरी उतार या ले सकते हैं।
- प्र. 54 **कमोडिटी की डिलीवरी पेइन का मतलब क्या है?**  
उ. डिलीवरी पेइन एक्सचेंज मान्य निर्दिष्ट वेयरहाउस में कांट्रैक्ट की टेंडर/डिलीवरी पिरीयड के दौरान विक्रेता द्वारा कमोडिटी की डिलीवरी है।
- प्र. 55 **डिलीवरी के समय फंड का पेइन का अर्थ क्या है?**  
उ. डिलीवरी के समय फंड का पेइन का अर्थ क्रेता सदस्य के सेटलमेंट एकाउंट से एक्सचेंज में, निर्दिष्ट वेयरहाउस कमोडिटी की डिलीवरी से पूर्व कोष का ट्रांसफर है।
- प्र. 56 **कमोडिटी में डिलीवरी पे आउट का मतलब क्या है?**  
उ. कमोडिटी में डिलीवरी पे आउट का मतलब एक्सचेंज मान्य वेयरहाउस से क्रेता द्वारा डिलीवरी उठाने के पूर्व का समय है।
- प्र. 57. **डिलीवरी के समय फंड्स के पे आउट का मतलब क्या है?**  
उ. डिलीवरी के समय फंड्स का पे आउट का मतलब क्रेता द्वारा कमोडिटी की डिलीवरी उठाने के बाद विक्रेता सदस्य के सेटलमेंट एकाउंट में फंड्स के ट्रांसफर से है।
- प्र. 58 **कांट्रैक्ट के विनिर्देशन में डिलीवरी लाजिक क्या है?**  
उ. कमोडिटी की डिलीवरी के समय टेंडर/डिलीवरी अवधि के दौरान क्रेता एवं विक्रेता के ओपन पोजिशन का विकल्प डिलीवरी लाजिक है। इसके विभिन्न विकल्प हैं- विक्रेता आप्शन, दोनों आप्शन और अनिवार्य डिलीवरी।

- प्र. 59 **डिलीवरी लाजिक में सेलर आप्शन का अर्थ क्या होता है?**  
उ. सेलर आप्शन में विक्रेता को कांट्रैक्ट की टेंडर/ डिलीवरी अवधि के दौरान के ओपन पोजिशन की डिलीवरी देने का आप्शन होगा। इस मामले में यह क्रेता पर निर्भर होगा कि वह मार्क मात्रा की डिलीवरी उठाए या पेनाल्टी का भुगतान करे।
- प्र. 60 **डिलीवरी के समय सेलर आप्शन के मामले में क्रेता का चयन कैसे करता है?**  
उ. सेलर आप्शन में, डिलीवरी उतारने के आशय भेजने पर विक्रेता की मात्रा का क्रेता के आशय से मिलाया जाता है। यदि डिलीवरी आशय के लिए पर्याप्त क्रेता के नहीं होने पर डिलीवरी ओपन पोजिशन धारकों (कांट्रैक्ट के क्रेता) को रैंडम आधार पर मार्क की जाती है और उनके द्वारा डिलीवरी उठाना आब्लिगेटरी होती है।
- प्र. 61 **कांट्रैक्ट विनिर्देशन के सेलर आप्शन में उल्लेखित डिलीवरी लाजिक में डिलीवरी के समय क्रेता का चयन कैसे होता है?**  
उ. सेलर आप्शन में, डिलीवरी उतारने वाले विक्रेता के आशय को डिलीवरी उठाने वाले क्रेता के आशय का मिलान किया जाता है। इसमें पर्याप्त क्रेता के नहीं होने पर डिलीवरी ओपन लांग पोजिशन धारकों (कांट्रैक्ट के क्रेता) को रैंडम आधार पर दी जाएगी और यह उनके लिए डिलीवरी उठाने या पेनाल्टी भरने के लिए आब्लिगेटरी होगी।
- प्र. 62 **कंपल्सरी डिलीवरी क्या है?**  
उ. कंपल्सरी डिलीवरी के मामले में क्रेता और विक्रेता दोनों के लिए टेंडर/डिलीवरी पिरीयड के समय ओपन पोजिशन को यदि कांट्रैक्ट की समाप्ति के समय डिलीवरी के लिए मार्क की जाती है, को उक्त कमोडिटी की डिलीवरी लेना और उतारना आब्लिगेटरी होगी।
- प्र. 63. **डिलीवरी लाजिक में बोथ आप्शन क्या हैं?**  
उ. बोथ आप्शन के मामले में डिलीवरी तभी प्रभावी होगी जब क्रेता और विक्रेता डिलीवरी उतारने या लेने पर सहमत हों। यदि डिलीवरी के लिए उनके आशय नहीं मिलने पर ऐसे ओपन पोजिशन को देय तिथि की दर से नकद में निपटाया जाएगा।
- प्र. 64 **डिलीवरी देने या उठाने की इच्छा जताने के बावजूद क्रेता और विक्रेता द्वारा डिफाल्ट होने पर क्या होगा?**  
उ. ऐसे मामले में कांट्रैक्ट के विनिर्देशन के मुताबिक पेनाल्टी लगाई जाएगी।
- प्र. 65 **आड लाट का तात्पर्य क्या है?**  
उ. कांट्रैक्ट की समाप्ति के समय यदि एक सदस्य के पास ओपन पोजिशन है जो डिलीवरी लाट के गुणांक में तब्दील नहीं हो सकता है, ऐसे लाट को आड लाट कहते हैं।
- प्र. 66 **विश्व में प्रमुख कमोडिटी एक्सचेंज कौन कौन से हैं?**  
उ. कमोडिटी फ्यूचर्स और आप्शन के कांट्रैक्टों में कारोबार किए जाने वाले विश्व के प्रमुख कमोडिटी एक्सचेंजों में न्यूयार्क मेटल एक्सचेंज (नायमेक्स), दालियन कमोडिटी एक्सचेंज (डीसीई), शिकागो बोर्ड आफ ट्रेड

(सीबोट), टोकियो कमोडिटी एक्सचेंज (टोकोम), लंदन मेटल एक्सचेंज (एलएमई), शेंघाई फ्युचर्स एक्सचेंज (एसएचएफई), इंटर कॉन्टिनेंटल एक्सचेंज (आईसीई), सेंट्रल जापान कमोडिटी एक्सचेंज (सी-काम), न्यूयार्क बोर्ड आफ ट्रेड (नायबोट), टोकियो ग्रेन एक्सचेंज (टीजीई) और ब्रैझाउ कमोडिटी एक्सचेंज (जेडसीई) का समावेश है।

प्र. 67

**विश्व में प्रथम कमोडिटी एक्सचेंज की स्थापना कब हुई थी ?**

उ.

विश्व में प्रथम कमोडिटी एक्सचेंज की स्थापना शिकागो बोर्ड आफ ट्रेड (सीबोट) के नाम से 1848 में शिकागो के व्यापारियों के एक समूह द्वारा की गई थी। समूह की इच्छा ट्रेड के लिए एक केंद्रीय बाजार स्थल बनाना था। पहले चार साल तक यह फ्लोर स्टोर के अहाते में था। इससे पूर्व किसानों के उत्पादों के लिए क्रेता पाना मुश्किल था। वे अपने उत्पाद को शिकागो ले जाते थे। इसमें परिवहन खर्च इतना हो जाता था कि किसानों को अपने अनबिके उत्पादों को निकट के झील में फेंकना पड़ता था।